INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

डॉ अमिता दुबे के समीक्षात्मक साहित्य का अनुशीलन

दिव्या सिंह, शोधार्थी, हिंदी, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. शोभा त्रिपाठी, सह–प्राध्यापक, शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्टस – सोशल साइंस, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

डॉ अमिता दुबे का नाम लेते ही एक ऐसा व्यक्तित्व सामने उभरकर आता है जो एक समय में जहाँ एक ओर कुशल कहानीकार हैं, सधी हुयी उपन्यासकार और भावुक कवयित्री हैं वहीं दूसरी ओर इस व्यक्तित्व से परे चिंतनशील आलोचक, विचारवान समीक्षक भी हैं। अमिता दुबे नें आलोचना के साथ ही विविध विधाओं की कृतियों की समीक्षा भी की है जो उनके द्वारा रचित पांच पुस्तकों **'कविता की आहटें', 'कविता की पदचाप', 'कविता की अनुगूंज', 'कविता की प्रतिध्वनि'** और **'कहानी की करवटें'** में संकलित है। प्रत्येक पुस्तक का कलेवर अलग है।

'कविता की आहटें' पुस्तक में सत्रह अलग–अलग कवियों की एक–एक प्रकाशित चयनित पुस्तक की समीक्षा की गयी है। इस पुस्तक समीक्षा में कृति लेखक/लेखिका, संपर्क, प्रकाशक, संस्करण, पृष्ठ व मूल्य आदि का विवरण देने के पश्चात् पुस्तक के विषय वस्तु, लेखिका की रचनाओं का साहित्यिक व सामाजिक धरातल पर चर्चा करते हुए दृष्टव्य रचनांशों को उद्धृत कर पाठक तक अधिकतम सन्देश पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में संकलित समीक्ष्य कृतियों में 'अखिलेश निगम 'अखिल' की कृति 'उत्तर देगा कौन ??', 'केशव प्रसाद वाजपेयी' की कृति 'झंकृति', 'मनोज कुमार 'मनुज' की कृति 'हृद्यांजलि', 'डॉ मंजू शुक्ला' की कृति 'मुक्ताकाश', 'डॉ संतोष ललोरिया' की कृति 'धूप भोर की', 'कैलाश नाथ पाण्डेय' की कृति 'मनीषा', 'ज्वाला प्रसाद कौशिक 'साधक' की कृति 'लहरों का सागर', 'डॉ मृदुला झा' की कृति 'हथेली पर कविता', 'कृष्णेश्वर डींगर' की कृति 'गीता काव्य कौमुदी', 'डॉ मिर्जा हसन नासिर' की कृति 'ग़ज़ल गुलजार', 'अवधेश गुप्त 'नमन' की कृति 'लोग न बोलेन आज', 'डॉ सुल्तान शाकिर हाशमी' की कृति 'ब्रजपंचामृत', 'निकुंज मिश्र 'किश्वर' की कृति 'वक्त के पाँव में बेड़ी', 'श्याम बिहारी सक्सेना' की कृति 'अनुनय तुम्हारा', 'प्रो० अम्बिका प्रसाद गुप्त' की कृति 'कभी सुबह तो शाम ज़िन्दगी', 'डॉ शोभा त्रिपाठी' की कृति 'दर्पण बोले साँच' और 'मधुकर अष्ठाना' द्वारा सम्पादित 'लखनऊ के प्रतिनिधि गीतकार' का चयन किया गया है। **कविता की आहटें**' पुस्तक में सत्रह अलग–अलग कवियों की एक–एक प्रकाशित चयनित पुस्तकों की समीक्षा के सम्बन्ध में अमिता जी कहती हैं कि– 'कविता की पुस्तकों की समीक्षा को इस दृष्टि से 'कविता की आहटें' पुस्तक में सम्मिलित किया गया है कि इस पुस्तक चर्चा के माध्यम से कविता की 'आहटों', का अनुभव किया जा सके। इन सभी पुस्तकों के दोषों को अनदेखा करते हुए गुणों का आत्मसात करने का प्रयास 'कविता की आहटों' में किया गया है। किसी के अवगुणों की बढ़ा–चढ़ा कर चर्चा करना अत्यंत सहज है परन्तु कमियों को अनदेखा कर अच्छाइयों पर दृष्टि केन्द्रित करना और प्रशंसात्मक दृष्टिकोण रखना उत्तरोत्तर विकास के लिए आवश्यक है।'[1]

इस पुस्तक में 'समीक्षा में कृति लेखक/लेखिका, संपर्क, प्रकाशक, संस्करण, पृष्ठ व मूल्य आदि का विवरण देने के पश्चात् पुस्तक के विषय वस्तु, लेखिका की रचनाओं का साहित्यिक व सामाजिक धरातल पर चर्चा करते हुए दृष्टव्य रचनांशों को उद्धत कर पाठक तक अधिकतम सन्देश पहुँचाने का प्रयास किया गया है। किसी भी समीक्षा में उस पुस्तक से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की त्रुटि का उल्लेख प्रकाश में नहीं लाया गया है। कृति में डॉ0 अमिता दुबे के स्वयं के काव्य संग्रह 'ये काश ही है' की समीक्षा श्री ज्ञानेश श्रीवास्तव जी की तथा डॉ सुधाकर अदीब जी की शुभाशंसा के रूप में एक पात्र भी मुद्रित है, जिनसे लेखिका की प्रतिभा का पूरा परिचय प्राप्त होता है। समीक्षा की भाषा परिपक्व व साहित्यनिष्ठ है। समीक्षक ने अपनी बात के रूप में 'अनुभूति के यह क्षण' में एक जगह साहित्य जगह से यह अनुरोध किया है कि 'पुस्तकों पर चर्चा को संज्ञान में लेते हुए पुस्तक–समीक्षा' को भी साहित्य–सृजन की एक विधा के रूप में मान्यता प्रदान करें।'[2] 'कविता की आहटें' पुस्तक का शीर्षक कोमल अनुभूति जगाता है। ये मंद 'आहटें' प्रभाव से किसी भी प्रकार हल्की नहीं है। इसकी उपेक्षा करना सम्भव नहीं है। लेखिका की यह आत्म–स्वीकृति है कि उक्त आलोचनाओं में, 'इन सभी पुस्तकों के दोषों को अनदेखा करते हुए गुणों को आत्मसात करने का प्रयास 'कविता की आहटों' में किया गया है।

यह स्वीकृति 'सार–सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय' की प्रवृत्ति दर्शाती है। इसके पीछे एक महान उद्देश्य छिपा हुआ है। गलतियों को खोजना आसान है, परन्तु गुणों को आत्मसात करते हुए नयी रचनाओं को प्रोत्साहित करना अत्यनत आवश्यक है। साथ ही यह लेखिका डॉ अमिता दुबे की उदार प्रकृति को भी सामने लाता है। आलोचना के क्षेत्र में यह एक सशक्त सकारात्मक कदम है।'[3]

इसी प्रकार **'कविता की पदचाप'** में उन्नीस कवियों की रचनाओं की समीक्षाओं को संकलित किया गया है। पूर्व प्रकाशित 'कविता की आहटें' की ही भांति इस पुस्तक का कलेवर भी है। डॉ0 अमिता दुबे नें स्वयं ही इसके विषय में लिखा है कि– 'कवितायें नए तेवर नए रूप में रची जा रही हैं। उसने अपना पारम्परिक बाना भी नहीं खोया है। पुस्तकें छपकर रचनाकार को आत्मिक संतोष देती हैं उसे नाम प्रसिद्दी भी मिलती है लेकिन ये पुस्तकें हिंदी साहित्य के इतिहास की मूल्यवान धरोहर कैसे बनें ? इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है। जब पुस्तकों पर चर्चा होगी तब ही उनके सम्बन्ध में कोई विचार सामने आयेगा और वह यह कौंधा हुआ विचार इतिहास के सापेक्ष खड़ा होकर 'पांचजन्य' फूंकेगा। 'कविता की पदचाप' में पाठकों को गजल, मुक्तक, दोहा, छन्दबद्ध कविता, मुक्त छन्द की कविता सभी रंग की पुस्तकें मिलेंगी। इसमें जहां ऐसे रचनाकार की कृति सम्मिलित है जिन्होंने कविता के क्षेत्र में पहली दस्तक दी है वहीं ऐसे भी रचनाकार 'कविता की पदचाप' पुस्तक की शोभा हैं जिन्हें साहित्य के क्षेत्र में कविता विधा के अंतर्गत एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है।'[4] पुस्तक में संकलित कवि और उनकी कृतियाँ हैं– 'डॉ किशोरी शरण शर्मा' और 'नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव' द्वारा सम्पादित 'हर सिंगार', 'आनन्द स्वरुप श्रीवास्तव' की कृति 'ज्वालमुखी होते हुए', 'डॉ रमा द्विवेदी' की कृति 'दो दो आकाश', डॉ मनसा पाण्डेय' की कृति 'एक नयी आशा', 'राम प्रकाश गोयल 'सोज़' की 'दीप यादों के', 'अशोक कुमार पाण्डेय 'अनहद' की 'अनुभूतियों का धरातल', 'शोभा दीक्षित 'भावना' की 'पिघलती आकाश गंगा', 'डॉ रंजना वर्मा' की 'ज़ज्बात', 'हरी प्रकाश 'हरि' की 'शिवा सन्देश', डॉ शंकर दत्त ओझा' की 'आस्था के दीप', 'देवकी नन्दन 'शान्त' की 'तलाश', 'मोहनलाल गौतम' की 'विलगाव', 'अरविन्द 'असर' की 'अन्तर', 'शिवमूर्ति त्रिपाठी 'चन्द्रेश' की 'भर आयेगी आँख तुम्हारी', 'महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' की 'लाली कहाँ है ?', 'नीलम सिंह' की 'अग्निपथ', 'कमल किशोर 'भावुक' की 'सन्नाटे में सरगम', 'सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' कृत 'रजनी' और 'रुद्रपाल गुप्त 'सरस की कृति 'सुनों कहानी राम की'द्य इसके साथ ही पुस्तक के अंत में दो समीक्षाएं अमिता दुबे के कविता संग्रह 'ये 'काश' ही है' पर संकलित हैं जो 'घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' और 'वीरेन्द्र सारंग' द्वारा लिखी गयी हैं

'कविता की अनुगूंज' में बारह पुस्तकों की समीक्षा संकलित है। जैसा कि अमिता दुबे नें कई स्थानों पर यह बात स्वीकार की है कि पुस्तकें उनके जीवन में प्राणवायु के समान हैं। वह पुस्तक को पढ़ कर यूँ ही जाने नहीं दे सकती बल्कि कुछ पुस्तके उन्हें झकझोर देती हैं और वह बाध्य हो जाती हैं उस पुस्तक की समीक्षा और अनुशीलन करने के लिए। 'कविता की अनुगूंज' भी ऐसी ही समीक्षात्मक पुस्तक हैं जिसमें उन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के परिचयात्मक विवरण के साथ ही समीक्षात्मक अनुशीलन भी किया है। **'कविता की अनुगूंज'** में जिन बारह पुस्तकों की समीक्षा संकलित है उन पंद्रह कवियों में कुछ तो एकदम नए हैं और कुछ स्थापित हैं। ये समीक्ष्य कृतियाँ 'श्री रमेश पोखरियाल' 'निशंक' की कृति 'कोई मुश्किल नहीं', 'श्री सत्येन्द्र कुमार सिंह 'शलभ' की कृति 'इतना मत चाहो उसे...', 'आचमन' साहि० सां० संस्था द्वारा प्रकाशित 'उन्नाव की काव्य साधना', श्री अखिलेश निगम 'अखिल की कृति 'अभिलाषा', श्री मोहनचन्द्र त्रिपाठी 'मोहन' की कृति 'अक्षर बनते मीत', 'श्री रामचन्द्र कौल 'अनाम' द्वारा रचित 'टुकड़े टुकड़े दर्द', 'श्रीमती मधु त्रिपाठी' कृत 'मधु माधुरी', 'प्रो० कमला श्रीवास्तव' की कृति 'गीत वाटिका', 'श्री धर्मपाल साहिल' कृत 'मेरे अंदर–एक समन्दर', 'सुश्री कमल कपूर' कृत 'वह एक पल', 'दो सुधाकर अदीब' द्वारा रचित 'हथेली पर जान' और 'सुरेन्द्र शास्त्री' कृत 'पूंछती हैं मछलियों से मछलियां' हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तक में तीन अन्य लेख भी संकलित हैं जो अमिता दुबे की रचनाओं 'ये काश ही है' और 'कविता की आहटें' पर आधारित हैं। ये क्रमशः 'मधुकर अष्ठाना', 'डॉ मधु जैन' और 'पार्थो सेन' द्वारा लिखी गयी हैं।

'कविता की प्रतिध्वनि' में तेरह पुस्तकों की समीक्षाओं का संकलन किया गया है। यह पुस्तक अपने कलेवर में दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में समीक्षाओं के अतिरिक्त दूसरे भाग 'प्रतिच्छाया' में अमिता दुबे के कविता कविता संग्रह 'ये 'काश' ही है' की श्री पार्थोसेन, डॉ मधु जैन एवं डॉ मंजरी खन्ना द्वारा लिखी गयी समीक्षाएं संकलित हैं।**'कविता की प्रतिध्वनि'** में कविता की तेरह पुस्तकों की समीक्षाओं का संकलन किया गया है। ये तेरह पुस्तकें हैं– 'बूँद–बूँद बादल', 'स्पर्श', 'अकारण', 'ओ गगन के मौन तारे', 'एक कंकर ताल में', 'अंतर्ध्वनि', 'जिक्रे वफ़ा', 'क्या कह रही है जिंदगी', 'सुवर्ण दोहा मंजरी', 'कोई शोर नहीं होता', 'अंतर्मन संघर्ष', 'चीख नहीं ये' और 'मंज़रियों के नीचे'। इन कृतियों के रचनाकार क्रमशः 'श्री राजेन्द्र वर्मा', 'डॉ सुलतान शाकिर हाशमी', 'श्री राजेन्द्र आहुति', 'श्रीमती वीरबाला', 'श्री शिवनाथ 'बिस्मिल', 'डॉ गणेश दत्त सारस्वत', 'श्री रमनलाल अग्रवाल 'रम्मन', 'सुश्री ममता तिवारी', 'श्री सुनील कुमार वाजपेयी', 'श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह', 'श्री राकेश शुक्ल 'उन्मुक्त', 'डॉ शोभा त्रिपाठी', 'श्री

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

गिरिधर गोपाल' हैं। पुस्तक के अंत में अमिता दुबे के कविता संग्रह 'ये 'काश' ही है' की तीन समीक्षाएं संकलित की गयी हैं जो क्रमशः श्री पार्थो सेन, डॉ मधु जैन और डॉ मंजरी खन्ना द्वारा लिखी गयी हैं।

'कहानी की करवटें' पुस्तक दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में ग्यारह अलग–अलग कहानीकारों के कहानी संकलन की अलग–अलग समीक्षाओं को संकलित किया गया है तो दूसरे भाग में स्वयं अमिता दुबे के कहानी संकलनों पाषाणी, नयनदीप और सिलवटें पर अलग–अलग समीक्षकों द्वारा लिखी गयी नौ समीक्षाओं का संकलन किया गया है। प्रथम भाग में समीक्षा के लिए 'सौरभ शर्मा 'निर्भय' के कहानी संग्रह 'सबसे प्यारी मेरी माँ', 'अलका प्रमोद' के कहानी संग्रह 'धूप का टुकड़ा', 'रमाकान्त क्षितिज' के कहानी संग्रह 'अधूरा सच', 'सुषमा श्रीवास्तव' के कहानी संग्रह 'सुर्ख बिन्दी की सुरंग', 'महेन्द्र भीष्म' के कहानी संग्रह 'क्या कहें', 'डॉ रजनी गुप्त' के कहानी संग्रह 'हाट बाज़ार', 'रश्मि बड़थ्वाल' के कहानी संग्रह 'बैताल प्रश्नों के बीच', 'डॉ सुधाकर अदीब' के कहानी संग्रह 'देह यात्रा', 'डॉ मनसा पाण्डेय' के कहानी संग्रह 'कुछ मनके रुद्राक्ष के', 'नीलम शंकर' के कहानी संग्रह 'सरकती रेत' और 'कुसुम अंसल' के कहानी संग्रह 'वह आया था' का चयन किया गया है। दूसरे भाग में 'विनयदास', 'मेजर ज़हरा रिज़वी', 'संजीव जायसवाल', 'सुशील सिद्धार्थ', 'रजनीश राज', 'एम० एलियास अंसारी', 'डॉ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ', 'डॉ हरिप्रसाद दुबे' और 'डॉ अंजलि' द्वारा अमिता दुबे के कहानी संकलन 'पाषाणी', 'नयनदीप' और 'सिलवटें' पर लिखी गयी समीक्षाओं को संकलित किया गया है।

'कहानी की करवटें' पुस्तक के प्रारम्भ में ही डॉ0 अमिता दुबे ने लिखा है कि– 'कहानी प्रत्येक रचनाकार की निजी अनुभूति के साथ–साथ समाज की अनुभूति भी होती है। ..इन्हीं व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभूतियों को पिरोकर रची कहानी की पुस्तकों को पढ़कर जो प्रतिक्रिया मन में आई वह 'कहानी की करवटें' कृति के रूप में आप सबके सामने है। मेरा विश्वास है कि यह कृति पाठकों के मन में इन कहानी की पुस्तकों के प्रति जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न करेंगी।'[5]

और उनका विश्वास निश्चय ही सत्य प्रतीत होता है क्योंकि उन्होंने जिस तरह से इस कहानियों की समीक्षा की है वह पाठकों न केवल जिज्ञासा जगाती है बल्कि उन्हें कहानी के द्वार तक जाने के लिए प्रेरित भी करती है।

इस प्रकार उन्होंने लगभग साठ काव्य कृतियों का अध्ययन अनुशीलन कर उनकी समीक्षाओं द्वारा साहित्य को कृतार्थ किया है और उसके बाद इन समीक्षाओं का सृजन हुआ। यह रचनाएं उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का जीता जागता उदाहरण हैं।

सन्दर्भ–

1– कविता की आहटें– डॉ अमिता दुबे, भूमिका से
अविरल प्रकाशन, गोमतीनगर, लखनऊ–2009
2– कविता की अनुगूंज– डॉ अमिता दुबे, पृष्ठ–68–69
पार्थो सेन के लेख– 'परिपक्व साहित्यनिष्ठ समीक्षा :कविता की आहटें' से
प्रकाशक– अविरल प्रकाशन, गोमतीनगर, लखनऊ
संस्करण–2011
3– कविता की अनुगूंज– डॉ अमिता दुबे, पृष्ठ–66
डॉ मधु जैन के लेख– 'ललित आलोचना : कविता की आहटें' से, वही
4– कविता की पदचाप– डॉ अमिता दुबे, भूमिका से
प्रकाशक– अविरल प्रकाशन, गोमतीनगर, लखनऊ
संस्करण–2010
5– कहानी की करवटें– डॉ अमिता दुबे, भूमिका से
प्रकाशक–अंशुमा प्रकाशन, गोमतीनगर, लखनऊ
संस्करण–2012